Original Research Paper Education

# उच्च माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की अकादमिक उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का अध्ययन करना

**Shikha Chaturvedi** Ph.D. Research Scholar from Mewar University Chhitorgarh, Rajasthan

**Dr. Asha Sharma** Principal, Aklank College of Education, Kota, Rajasthan

**ABSTRACT** शिक्षा एक जीवन पर्याप्त चलने वाली प्रकिया है और इसका उद्देश्य बालक की जन्मजात शक्तियों का सर्म्पूण विकास करना है। शिक्षा के द्वारा ही हम प्रबल नागरिक पैदा कर सकते हैं। हमारे जीवन का उद्देश्य ऐसे बालकों का निर्माण करना है जिससे की वह स्वयं की भावनाओं को समझते हुए दूसरे के साथ समायोजन स्थापित कर सकें। किसी भी देश की प्रगति उस देश के बालकों के ऊपर निर्भर करती है। यदि बालकों में नैतिक, सांवेगिक, चारित्रिक व सामाजिक गुण हों तो देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। सांवेगिक बुद्धिमत्ता एक ऐसा कारक है जो कि बालकों को इस योग्य बना सकता है, जिससे छात्र स्वयं की व दूसरों की भावनाओं को समझ सकें तथा योग्यता व क्षमताओं को पहचान कर स्वयं को अपने वातावरण में समायोजित कर सकें। ऐसा देखा गया है कि बालकों की अकादमिक उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता का सकारात्मक प्रभाव पाया गया है। सांवेगिक बुद्धिमत्ता के द्वारा बालक स्वयं के संवेगों को नियंत्रित कर सकता है तथा स्वयं व दूसरों को निराशा से बाहर निकालकर विपरित परिस्थितयों में स्वयं को समायोजित करने की क्षमता का विकास कर सकता है। अतः सांवेगिक बुद्धिमत्ता एक ऐसी क्षमता है जो दूसरों लोगों की सफलता से सम्बंधित होती है तथा स्वयं को जागरूक बनाते हुए अपनी संवेदनाओं को समझना व दूसरे व्यक्तियों की क्षमताओं को उपयोग करते हुए उसके व्यवहार में परिर्वतन लाना है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र सांवेगिक बुद्धिमत्ता का बालकों की अकादमिक उपलब्धि पर प्रभाव से सम्बंधित हैं।

**KEYWORDS** : सांवेगिक बुद्धिमत्ता, अकादमिक उपलब्धि

शिक्षा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का एक सशक्त माध्यम है। यह व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों का शोधन व मार्गान्तीकरण करके उसे समाज का सक्रिय सदस्य बनाती है। ताकि वह अपने उतरदायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सके। वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य बदल चुके है। अच्छी शिक्षा व्यवस्था ही प्रबुद्ध नागरिक पैदा कर सकती है। शिक्षक छात्र व पाठ्यक्रम शिक्षा प्रक्रिया के तीन ध्रुव हैं। पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। अतः यह महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि विद्यार्थियों का पाठ्यक्रय कैसा है व पाठ्यक्रय में किस प्रकार की सामग्री सम्मिलित की जाए, जिससे छात्रों के बुद्धि के स्तर को बढ़ाया जा सके? क्योंकि सांवेगिक बुद्धिमत्ता का छात्रों की बुद्धिलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता हो, सामान्यतया देखा गया है कि अधिक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों की बुद्धिलब्धि कम सांवेगिक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों की उपलब्धि से अधिक होती है। अतः आवश्यकता है कि अध्यापक छात्रों में उन गुणों की प्रतिपूर्ति करें जो जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में संघर्श करने की सामर्थ्य पैदा कर सकें। यह सामर्थ्य तभी पैदा होगी जब जीवन की कार्यप्रणाली संतुलित व समन्वित हो। इसके लिये व्यक्ति में अपने संवेगों का कुशल प्रबन्धन आवश्यक है। भावनाओं व संवेगों का कुशल प्रबन्धन व्यक्ति में जागरूकता, स्वनियंत्रण, स्वप्रबन्धन, प्रेरणा, कौशल का विकास करता है।

यशपाल कमेटी व एनसीटीई के चैयरमेन सिद्दकी की रिपोर्ट के आधार पर यह निश्चित किया जा रहा है कि पाठ्यक्रय संरचना इस प्रकार रचित की जाए कि सहशैक्षिक विधियों के प्रयोग के साथ साथ सांवेगिक बुद्धिमत्ता की क्षमता का विस्तृत क्षेत्र उसमें शामिल हो सके।

**गोलमैन (1993–1995)** के अनुसार सांवेगिक बुद्धिमत्ता को एक बहुआयामी योग्यता बताया गया है जिसके अनुसार किसी व्यक्ति के अन्दर प्रेरणा प्रदान करने की, उसे निराशा से बाहर निकालने की, संवेगो को नियंत्रण के करने की तथा सोचने की क्षमता पैदा करना आदि विकसित हो जाती है।

Baran (1996) के अनुसार सांवेगिक बुद्धिमत्ता एक क्षमता है जो दूसरे लोगों की सफलता से संबंधित होती है व स्वयं को जागरूक बनाते हुये अपनी संवेदनाओं को समझना व दूसरे व्यक्तियों की क्षमताओं को उपयोग करते हुये उसके व्यवहार में परिवर्ततन लाना है।

इनके अलावा अन्य नेता जैसे – इंदिरा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, चाणक्य आदि में भी सांवेगिक बुद्धिमत्ता की योग्यता देखने को मिलती है तथा इनका व्यक्तित्व हमारे जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। भारत में व विदेशों में किए गए शोध अध्ययनों से स्पश्ट है कि शिक्षार्थियों की शिक्षा में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का विशेश महत्व होता है। छात्रों में स्वजागरूकता भावना प्रबंधन, दूसरों के संवेगो को समझना, सामाजिक कौशलों का विकास होना आवश्यक है जो बालक में सांवेगिक बुद्धिमत्ता के द्वारा बालक स्वयं को तथा स्वयं के द्वारा अन्य बालक में जागरूकता स्वनियंत्रण व अभिप्रेरणा जैसे गुणों को विकसित किया जा सकता है और इस प्रकार सामान्य सामर्थ्य में वह उन योग्यताओं को विकसित कर सकता है जिसके द्वारा वह दूसरों को समझ सके व उनके कौशल व योग्यताओं को समझकर उनमें वर्तमान समयानुसार बदलाव ला सके।

### आवश्यकता :–

आज के वैश्वीकरण के युग के शिक्षक का उद्देश्य छात्रों को न केवल कक्षा–कक्ष की सूचना प्रदान करना है बल्कि इससे बाहर निकलकर उन्हें जीवन जीने की कला सिखाना भी है। यह कला तभी प्राप्त हो सकती है जब हम सूचनाओं का उपयोग भावना प्रबंधन व सामंस्य के साथ कर सकें। अतः शिक्षक द्वारा छात्रों के स्त्रोतों का प्रबंधन कर उन्हें प्रेरित कर शिक्षा अधिगम परिस्थितियों को विस्तार व निखार देकर उनमें सांवेगिक बुद्धिमत्ता पैदा कर सकें ताकि छात्रों की उपलब्धि को बढ़ाया जा सके।

Salovar and Mayer (1990) ने सांवेगिक बुद्धिमत्ता पर एक साहित्य प्रस्तावित किया जिसमें सांवेगिक बुद्धिमत्ता को वह योग्यता बताया गया जिसमें छात्र स्वयं की व दूसरों की भावनाओं को समझ सके व योग्यताओं व क्षमताओं को पहचानकर स्वयं को अपने वातावरण में समायोजित कर सके। अतः उन्होंने यह पाया कि जिन छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता उच्च स्तर की थी वे वातावरण में आसानी से समायोजित हो जाते हैं।

गुप्ता ज्योतिका (2011) ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में अवसाद स्थिति पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता व उसकी भूमिका पर अध्ययन कर पाया कि जिन छात्रों की सांवेगिक व बौद्धिक स्तर उच्च था उनमें अवसाद की स्थिती कम थी।

Schutte and Colleagues (2001) ने एक लेख में पाया कि जिन छात्रों की EI अधिक होती है वो छात्र Emphathic Presprective व Talking व Self Monitoring में अधिक योग्य होते हैं। अतः विद्यालय में पाठ्यक्रमी क्रियाओं में सांवेगिक बुद्धिमत्ता को शामिल किया जाना चाहिए तथा उन्हें EI की शिक्षा दी जानी चाहिये।

इस प्रकार पूर्व अध्ययनों से यह स्पश्ट होता है कि आज शिक्षा अधिगम प्रक्रिया कक्षा कक्ष के दायरे में सीमित नहीं बल्कि जीवन के संघर्श करने की सामर्थ्य पैदा करने का पाठ्यक्रय उद्भूत करने का समर्थन करती है। जिसके लिये छात्रों में EI उत्पन्न करने की आवश्यकता महसूस होती है। अतः वर्तमान उभरती हुई शिक्षण अधिगम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री के मन–मस्तिश्क में यह उत्कंठा उत्पन्न हुई कि क्या छात्र उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता का कोई प्रभाव पड़ता है।

### समस्या कथन

''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की उपलब्धियों पर सांवेगिक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का अध्ययन।''

### तकनीकी भाब्दों का परिभाशीकरण :–

1. **उच्च माध्यमिक स्तरः–** माध्यमिक स्तरीय शिक्षा पूर्ण करने के बाद छात्र उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षा में प्रविश्ठ होता है। XI व XII कक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर में सम्मिलित किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों से आशय XI व XII में पढ़ने वाले छात्रों से है।
2. **छात्र उपलब्धि :–** या (प्रभावशीलता) :–
   छात्रों के द्वारा प्राप्त किये गए अंकों के आधार पर मूल्यांकन करके छात्रों की सतत व व्यापक प्रगति का अवलोकन करना ही अकादमिक उपलब्धि कहलाता है।
   छात्र उपलब्धि से आशय उन गुणों व कौशलों के विकास से है जो उसकी उपलब्धियों को सार्थकता से सिद्ध कर सके। इसमें छात्र की योग्यताओं, सांवेगिक बुद्धिमता, दूसरे की भावनाओं को समझने, स्वजागरूकता आदि गुणों को सम्मिलित किया गया। एक छात्र उपरोक्त योग्यताओं को अधिकृत करके ही अपनी उपलब्धि को बढ़ा सकता है।
3. **संवेगिक बुद्धिमत्ता** (John D Anyor and peter Salovey) :- के अनुसार

सांवेगिक बुद्धिमत्ता संवेगो को जानना, विचारों को समन्वित करना और प्रबंधित करना है। छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता के मापन में छात्रों की व्यक्तिगत व सामाजिक कुशलताओं के साथ–साथ जागरूकता, स्वप्रेरणा, सांवेगिक स्थिरता, सम्बन्ध स्थापित करना व दूसरों के प्रति व्यवहार जैसे कारकों को शामिल किया गया है।

**उद्देश्य :–**

1. RBSE के छात्रों की अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. CBSE के छात्रों की अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. RBSE के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करना।
4. CBSE के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन।
5. CBSE व RBSE के छात्रों की अकादमिक तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. CBSE व RBSE के छात्रों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाऐं**

1- RBSE व CBSE के विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2- RBSE व CBSE के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

**भाोध विधि**

**अनुसंधान प्रारूप :–**

प्रकरण की प्रकृति व उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये इस अनुसंधान में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग में किया गया है।

**तकनीक**

स्तरीय न्यादर्श तकनीक :– प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीय न्यायदर्श तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसमें अनुसंधानकर्ता विशिश्ट लक्षणों के आधार पर छोटे छोटे समजात समूह बनाता है तथा जनसंख्या के स्तरों को निश्चित करता है।

**जनसंख्या व न्यायदर्श :–**

| | | |
|---|---|---|
| जनसंख्या | : | कोटा शहर की सभी उच्च माध्यमिक स्कूलों के विद्यार्थी |
| न्यायदर्श | : | 100 विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर के R.B.S.E. व C.B.S.E. स्कूल से अध्ययन के लिए चयन किये जायेगें। जिसमें 50 छात्र व 50 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। |
| न्यायदर्श तकनीक | : | आवश्यकता को देखते हुये स्तरीय न्यायदर्श तकनीक का चयन किया गया है। |
| स्तरीय न्यायदर्श तकनीक | : | जनसंख्या को समान छोटे छोटे ग्रुप में विभाजित किया गया है व ग्रुप के सभी विद्यार्थी माध्यमिक के स्कूल से लिये गये है। |

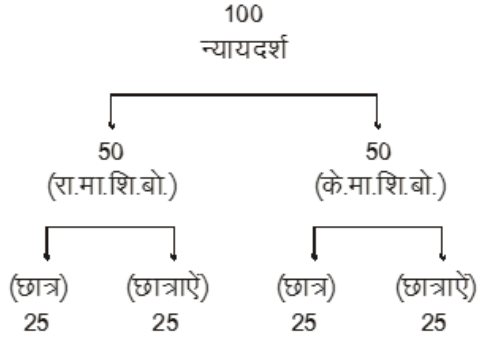


**उपकरण** :– आंकडे संकलन की योजना।

**सांख्यिकी विधि :–**

**प्रतिशत विधि –** प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेशण हेतु प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

**आंकड़ों का विश्लेशण :–** प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया –

1. **अकादमिक उपलब्धि** :– सतत व व्यापक प्रगति को देखते हुये छात्रों के अंको का संकलन व सत्र में पढ़ाई गए छात्रों का परिणाम।
2. **सांवेगिक बुद्धिमत्ता** :– SK Mangal and Shubhra Mangal EI Inventory (EII MM) (It consists of 100 items of 4 areas of 4 areas as – 1. Interpersonal awareness (own emotions) 2. Intera personal awareness 3. Intrapersonal management. 4. Interpersonal management age group 16+

**आंकड़ों का विश्लेशण**

**परिकल्पना – 1**

RBSE व CBSE के विद्यार्थियो के अकादमिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अकादमिक उपलब्धि**

Acadamic Achievement
(Range of Raw Scores)

| Category | | CBSE | RBSE |
|---|---|---|---|
| 85-75 | VG | 18 | 11 |
| 75-65 | G | 32 | 29 |
| 65-55 | AV | 45 | 56 |
| 55-45 | P | 5 | 4 |

उपरोक्त सारणी को अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि –

1. RBSE के 11 विद्यार्थियों का अकादमिक स्तर अत्यधिक उच्च है जबकि CBSE के 18 विद्यार्थियों का अकादमिक स्तर अति उच्च है।
2. RBSE के 29 विद्यार्थियों का तथा CBSE के 32 विद्यार्थियों का अकादमिक स्तर उच्च श्रेणी का हैं।
3. RBSE के 56 विद्यार्थियों का व CBSE के 45 विद्यार्थियो का अकादमिक स्तर सामान्य श्रेणी का है।
4. RBSE की 4 विद्यार्थियों का व CBSE के 5 विद्यार्थियों का अकादमिक स्तर सामान्य स्तर सामान्य से कम है।

**निश्कर्श :–**

अतः यह निश्कर्श निकलता है कि RBSE व CBSE के विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

**परिकल्पना – 2**

RBSE व CBSE के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।

**सारणी सांवेगिक बुद्धिमता**

| Range of raw score | Category | CBSE | RBSE |
|---|---|---|---|
| 105-90 | VG | 15 | 4 |
| 90-75 | G | 25 | 9 |
| 75-60 | AV | 40 | 52 |
| 60-45 | P | 20 | 25 |

उपरोक्त सारणी को अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि –

1. RBSE के 4 विद्यार्थियों की व CBSE के 15 विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता अति उच्च है।
2. RBSE के 9 विद्यार्थी व CBSE के 25 विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि उच्च स्तर की है।
3. RBSE के 52 विद्यार्थी व CBSE के 40 विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता सामान्य स्तर की है।
4. अन्त में RBSE के 25 विद्यार्थी व CBSE के 20 विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता सामान्य से कम है।

**निश्कर्श:–**

अतः यह निश्कर्श निकलता है कि RBSE व CBSE के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


1. अरोड़ा, टीटा – शिक्षण अधिगम के मनोसामाजिक आधार , शिक्षा प्रकाशन जयपुर।
2. Barent – Principals of emotional intelligence.
3. Goleman D – Emotioanl intelligence ( why it can matte were than I.Q. Landon blooms bury.
4. Haskett – Study on E.I. in teaching success in higher education.
5. IJAZ Ahmed Tatlah, Dr. Tanseen – Role of emotioal intelligence and creativity in the academic achievement of students.
6. Jadav P.S. – Effect of mastery learning strategy on pupils intelligence and creativity of class XI & XII.
7. Kwang Ng, Karen Kar – lin Hor – Teaching attitude, emotional intelligence and creativity of school students.
8. नागर कैलाशनाथ – सांख्यिकी के मूल तत्व, मनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
9. Prago- Emotional inteligence tech and achievement of high school students.
10. P.Solovery , JD Mayer – Imagination, congnition, and personality.
11. राय पारसनाथ व सी.बी. राय अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा।
12. Sing Bhoodev – A study of effect of specially designed teaching strategy among sr. Sec. School children.
13. Shodganga- Influbnet.ac.in08chapter2.pdf.
14. Walker – study on E.I. of classroom teachers.

**Reference Websites :-**
1. en.wikipedia.org/……./emotional intelligence.
2. www.danielgoleman.info/.../emotional intelligence.
3. www.psychologytoday.com/..../emotional.
4. www.soundviewpro.com/
5. www.eicomsortium.org/
6. www.researchgate.net/.../emotional intelligence.
7. Shodganga-Inflibnet.ac.in08chapter2.pdf.